Semester-II

CC VI

Unit IV

World War II & its impact

Vetted by :

प्रो० (डॉ०) सुरेन्द्र कुमार
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग
पटना विश्वविद्यालय, पटना
संपर्क – 9835463960

डॉ० विद्यानन्द विधाता
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
पटना विश्वविद्यालय, पटना
संपर्क – 9472084115

इस e-content में द्वितीयक विश्वयुद्ध का विश्व राजनीति पर प्रभाव की चर्चा की गई है :

विश्व राजनीति पर द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रभाव :

अगस्त 1945 में जापान की पराजय के साथ ही द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त हो गया। युद्ध के उपरांत विजयी राष्ट्रों से लोगों को शान्ति एवं पुनर्निर्माण की आशायें जाग उठी, परन्तु यह कार्यरूप में परिणत नहीं हो सका। पूंजीवादी एवं साम्यवादी विचारों से उत्पन्न टकराहट ने शीत युद्ध की परिस्थिति उत्पन्न कर दी जिसका प्रभाव अन्य देशों के अर्थव्यवस्था, सैन्य व्यवस्था और राजनीति पर पड़ा।

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् अमेरिका और रूस दो सर्वाधिक शक्तिशाली देश के रूप में उभर कर सामने आए। दोनों देश युद्ध के दौरान साथ–साथ लड़ रहे थे, परन्तु युद्ध के पश्चात् मित्रता की यह स्थिति बरकरार नहीं रह सकी। अमेरिका जहाँ पूँजीवादी व्यवस्था का समर्थक था, वहीं सोवियत रूस साम्यवादी व्यवस्था का। इन दोनों देशों ने अपनी शक्ति और पूँजी के बल पर अपने समर्थक देशों की संख्या बढ़ाने का प्रयास किया। फलतः विश्व राजनीति में पूरा विश्व दो गुटों में बँट गया। साम्यवादी रूस को घेरने के लिए अमेरिका ने पश्चिमी यूरोप के देशों के साथ मिलकर NATO, SEATO जैसे सैन्य संगठन बनाए। रूस ने भी इसी तरह के सैन्य समझौता अपने समर्थक देशों के साथ किया। इस तरह जो तनाव पैदा हुआ, वह अंततः शीतयुद्ध का कारण बना।

विश्वयुद्ध के पश्यचात् विश्व राजनीति में एक नए प्रकार का आन्दोलन शुरू हुआ, जिसे गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के नाम से जाना जाता है। जिन देशों को द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् स्वतंत्रता हासिल हुई थी, वे अब पूँजीवादी या साम्यवादी गुट में शामिल होकर अपनी स्वतंत्रता को खोना नहीं चाहते थे। वे एक स्वतंत्र विदेश नीति अपनाने के पक्ष में थे। साथ ही इन नव स्वतंत्र देश के नेताओं का यह भी विचार था कि किसी एक गुट में शामिल होने पर विकास ममें बाधा पहुँचेगी। अतः भारत के जवाहर लाल नेहरू, इंडोनेशिया के डा० सुकार्णो, मिस्र के कर्नल नासिर,

यूगोस्लाविया के मार्शल टोटो जैसे नेताओं ने एक नए प्रकार के संगठन का निर्माण किया, जिसे गुटनिरपेक्ष आंदोलन के नाम से जाना गया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् पश्चिमी यूरोप सहित कई देश के राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन हुआ। 1945 में ब्रिटेन में संसदीय चुनाव हुआ, जिसमें मजदूर दल ने हाउस आफ कामन्स के 640 स्थानों में से 393 स्थान प्राप्त करके पूर्ण बहुमत अर्जित कर लिया। अतः चर्चिल की सरकार के स्थान पर मजदूर दल के नेता क्लीमेन्ट एटली ने नया मंत्रिमंडल गठित किया।

एटनी की सरकार ने अपनी साम्राज्य संबंधी नीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हो गया। 1948 के आरंभ में वर्मा को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की गई। इसी वर्ष श्रीलंका (सीलोन) को औपनिवेशक स्वराज्य प्राप्त हुआ। फिलिस्तीन में भी ब्रिटिश सरकार ने अपने अधिदेश (मैण्डेट) का परित्याग कर दिया। इसी अवधि में मलाया राज्य संघ को भी स्वशासन के अतिरिक्त अधिकार प्रदान किए गए। इस तरह, विश्व मानचित्र में कई स्वतंत्र देशों का प्रादर्भाव इस युद्ध के पश्चात् हुआ।

फ्रांस की राजनीतिक व्यवस्था में भी युद्ध के पश्चात् परिवर्तन हुआ। मई 1945 में जर्मनी के समर्पण के पश्चात् फ्रांस में राष्ट्रीय सभा के चुनाव, जो 1936 से नहीं हो पाया था की माँग की जाने लगी। अतः अक्टुबर,

1945 सार्वजनिक प्रताधिकार के आधार पर राष्ट्रीय विधानमंडल के चुनाव कराये गए। इस संविधान सभा ने नवंबर, 1945 में द गाल को राष्ट्रपति निर्वाचित किया, किन्तु समाजवादियों के साथ तीव्र मतभेदों के कारण जनवरी, 1946 में त्यागपत्र दे दिया। जुन, 1946 को दूसरी संविधान सभा का निर्वाचण कराया गया। इसके द्वारा संविधान का जो मसौदा तैयार हुआ, वह पास कर दिया गया। इस प्रकार फ्रांस में चतुर्थ गणतंत्र का संविधान विधिवत लागू हो गया।

जर्मनी के राजनीतिक व्यवस्था पर भी इस विश्वयुद्ध का प्रभाव पड़ा। 1945 में जर्मनी के पराजय के बाद उसे अमेरिकन, ब्रिटिश, फ्रेंच और रूसी क्षेत्रों में विभाजित कर दिया गया था। इसके पश्चात् पश्चिमी राज्यों एवं सोवियत संघ के बीच जर्मनी में नीति–सम्बन्धी मतभेद लगातार बढ़ते गये और मार्च, 1948 में रूसी प्रतिनिधि "सहबद्ध राष्ट्र नियंत्रण परिषद" की बैठक छोड़कर चला गया, जिससे भविष्य में पारस्परिक सहयोग की आशा समाप्त हो गई। जून, 1948 में पूर्व एवं पश्चिमी जर्मनी पृचक मुद्रार्थ प्रचलित की गई और उसी के बाद रूसियों ने बर्लिन का सरोध (Blockade) आरम्भ कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप पश्चिमी राष्ट्रों को पश्चिमी बर्लिन तक पहुँचने के लिए काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। बर्लिन का यह सरोध सितम्बर, 1949 तक चलता रहा। इसी बीच में

अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस की सरकारें अपने क्षेत्रों का एकीकरण करने में सहमत हो गई।

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् इटली की राजनीति में परिवर्तन हुआ। मई, 1945 में जर्मनी के पतन के फलस्वरूप समस्त नात्सी एवं फासिस्ट सेनाओं को भी समर्पण करना पड़ा। इसी समय संयुक्त मोर्चे के दलों बोनोमी के स्थान पर भूमिगत फासिस्ट विरोधी यदल के नेता फेरूसिया पार को पुनसंगठित इटली का प्रधानमंत्री बनाया। परन्तु फेरूसियों उत्पन्न समस्या पर काबू पाने में नकामा रहा। इस स्थिति का लाभ इटली के साम्यवादी नेता तोगलियानी के नेतृत्व में साम्यवादियों ने उठाने का प्रयास किया। अंततः 1945 को फेरूसियों को त्याग पत्र देना पड़ा। इसके पश्चात् क्रिश्चियन डिमोक्रेटिक पार्टी के नेता एलसिड ही गेस्पेरी ने समाजवादियों के सहयोग से नया मंत्रिमंडल गठित किया। अंततः इटली में राजतंत्र को समाप्त कर दिया गया और वहाँ गणतंत्रात्मक व्यवस्था कायम हुई।

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् रूस में स्टालिन की शक्ति सर्वोच्च शिखर पर पहुँच गयी और वह राष्ट्र का सर्वशक्तिशाली व्यक्ति बना रहा। 1946 में सर्वोच्च सोवियत के दोनों सदनों का निर्वाचर कराया गया। लगभग 99 प्रतिशत मतदाताओं ने दल द्वारा प्रस्तावित सभी प्रत्याशियों का समर्थन किया। चुनाव के पश्चात् स्टालिन ने नई सरकार गठित की। उसी समय से केन्द्रीय मंत्रिमंडल को जन कमिसार परिषद के स्थान पर

मंत्रिपरिषद कहा जाने लगा। इस दौरान रूस से पूर्वी यूरोप के देशों पर अपनी पकड़ मजबूत बनाने का प्रयास किया। अंततः इन देशों ने भी साम्यवादी शक्तियाँ मजबूत हुई।

इस प्रकार, द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् विश्व के विभिन्न देशों में कई परिवर्तन हुए। कई देशों में सतारूढ़ दल को जनता में सता से हटा दिया और नई सरकार को आशा के साथ लाया। राजययतंत्रात्मक शासन व्यवस्था के स्थान पर गणतंत्रात्मक शासन व्यवस्था स्थापित हुई। शीत युद्ध की परिस्थिति ने पुनः विश्व में एक तनाव को जन्म दिया, जिसकी समाप्ति रूस के विपटन के पश्चात् ही हुआ। विश्व मानचित्र में कई स्वतंत्र देशों का प्रादुर्भाव हुआ। इस तरह, इस दौरान कई राजनीतिक परिवर्तन विश्व में देखने को मिले।